



### सुवह-भाश्ता के तामाशी

मातृश्री मतरादेवी छगनराजजी खुमाजी हिराणी एवं भ्राताश्री लक्ष्मीचन्दजी छगनराजजी हिराणी के दिव्यारोष से  
शा. रमेशकुमार, सुरेशकुमार, मुकेशकुमार, हितेशकुमार, अंकेशकुमार, सिद्धांत, किश, वेदांश  
बेटा-पोता शा. छगनराजजी खुमाजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा  
प्रतिष्ठान : सुरेश एन्ड कों., तिरुनेलवेली



### सुवह की नवकारशी के तामाशी

पिताश्री मंगलचंदजी पाबुदेवी कुन्दनमलजी हिराणी के दिव्यारोष से एवं मातृश्री फैसीदेवी मंगलचंदजी के आशीर्वाद से  
पुत्र-पुत्रवधू : दिनेशकुमार-चंद्रादेवी, महावीरकुमार-मंजुदेवी, गजराज-मीनादेवी  
पौत्र-पौत्रवधू : मोहकुमार-भव्या, रिषभकुमार-वैशाली, निलेश, ध्रुवराज  
पौत्री : अर्पिता, रिरिता, रिधिमा  
बेटा-पोता-पड़पोता शा. मंगलचंदजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा  
प्रतिष्ठान : श्रीमती फैसीदेवी मंगलचंदजी हिराणी, चेन्नई - मुंबई - रेवतड़ा



### शाम की नवकारशी के तामाशी

पिताश्री मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी के दिव्यारोष एवं मातृश्री कमलादेवी मुन्नीलालजी हिराणी के आशीर्वाद से  
पुत्र-पुत्रवधू : राजेंद्रकुमार-रेखादेवी, अजयकुमार-संगीतादेवी, विनोदकुमार-पिंकीदेवी,  
अशोककुमार-अंजनादेवी, दीपककुमार-सुमनदेवी • बेटे-जमाईसा : भारतीदेवी-मदनलालजी वाणीगोता  
पौत्र : साहिल, रेहंसा, दक्ष, पर्व • पौत्री : ईशिका, होनल, दीया, छवि, दीहा, आरवी  
बेटा-पोता शा. मुन्नीलालजी कुन्दनमलजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा  
प्रतिष्ठान : दीपक ट्रेडर्स, चेन्नई - मुंबई



## दीक्षा कल्याणक

अद्भुत त्याग के धारक तीर्थंकर परमात्मा जब माता की कुक्षि में आते हैं तब से ही निर्मल, शुद्धमति, श्रुत और अवधिज्ञान के स्वामी होने से स्वयं दीक्षा का समय जानते हैं फिर भी परम्परा, आचार, मर्यादा के कारण नवलोकांतिक देवों की प्रार्थना तीर्थ प्रवर्तकों की विनंती के पश्चात् ही भगवान एक वर्ष तक प्रतिदिन एक करोड़ आठ लाख सोनैया का दान देकर जगत के जीवों की दरिद्रता दूर करते हैं। पश्चात् सर्व विरति धर्म (संयम) को स्वीकार करते हैं।